सल्तनत कालीन स्थापत्यकला

Dr NIRAJ
LECTURER(TEMP) DEPARTMENTOF HISTORY
AMPG COLLEGE VARANASI

भारतीय कला का विकास भारतीय धर्म की ही भांति कमवध्द है। भारतीय कला की अनेक विशेषताएं हैं। प्रथम- इसके स्वभाव की लोच है जिसने इसके विकास को इस प्रकार प्रभावित किया कि इसकी विकास श्रृंखला को अनेक अवस्थाओं से पार होना पड़ा। इसके विकास के प्रत्येक चरण में समन्वयवादिता का एक कम है। इस कारण भारतीय कला पर विदेशी प्रभाव भी पड़ा है। द्वितीय- इसकी भव्यता तथा महानता है। इस पहलू पर भी विदेशी प्रभाव पड़ा।राजपूत काल में मंदिरों का निर्माण एक विकसित चरण तक पहुंचा गया। इसको राजपूत शासकों ने प्रश्तय दिया। इसके द्वारा वे अपने नाम को इतिहास में अमर करना चाहते थे। अतः उत्तरी भारत में उनके छोटे एवं बड़े मंदिरों का निर्माण हुआ। मंदिर का आकार एवं सुंदरता दान करता की इच्छा पर निर्भर करता था। इनका निर्माण बड़े बड़े पत्थरों के द्वारा हुआ है। पत्थरों में इन खण्डो को किसी रोक कि आवश्यकता थी। अतः धरनो (प्रकाढेठो) का प्रयोग रोक के रूप में किया जाता था। इनका आविर्भाव हिन्दू धर्म से हुआ था।

जब मुस्लिम विजेता भारत आये तो उन्हें कलाकोटा की प्रचुरता तथा कला के उच्च आदर्शों के दर्शन हुए। उनको राजनीतिक तथा सांस्कृतिक प्रसार करना था। यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि दिल्ली के आरंभिक सुल्तान केवल सैनिक थे। किन्तु इसके साथ ही साथ कला के प्रति रुचि होने पर भी वे इस क्षेत्र में उन्नति न कर सके क्योंकि उन्होंने अपने आप को भारतीय परंपराओं के विपरित पाया।मंदिर पूजा गृह थे तथा उनमें आपार धन-संचित था जो कि वाहय आक्रमणकारियों के लिए प्रलोभन का कारण बना। महमूद गजनवी तथा मोहम्मद गौरी के अनेक आक्रमण हुए परिणाम स्वरूप 1206 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रथम मुस्लिम राज्य की नींव डाली स्थापत्य कला के संबंध में एक योजना बनाने में सफल हुआ। और मस्जिद निर्माण करने का निश्चय किया। उसके पास नवीन सामग्रियों को इकट्ठा करने का समय अभाव था। अतएव उसने मस्जिदों के निर्माण में मंदिरों के ध्वंसावशेषो का प्रयोग किया।

भारतीय कला तथा मुस्लिम कला में यह अंतर है कि भारतीय कला में समान्यत धरनों प्रकोढठो का प्रयोग विशाल पत्थर खंडों का एक दूसरे पर टिका होना है। मंदिर नीचे से ऊपर तक देखने में निचला भाग चौड़ा तथा ऊपरी भाग पतला है। दूसरी ओर मुस्लिम कला गुंबद तथा मेहराबों पर आधारित है तथा धरन के प्रयोग का पूर्णतः बहिष्कार किया गया है। मुस्लिम पद्धति अंडाकार दिखाई पड़ती है किंतु हिंदू गावदुम है। भारतीय कलाकार मंदिरों में कलश बनाने में निपुण थे किंतु मुस्लिम कलश के प्रयोग से अनभिज्ञ थे। जोकि गुंबद की भांति होता है। कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित कुब्ब्तुल इस्लाम मस्जिद की स्थापत्य कला पर ध्यान देने से कुछ विशेषताएं दिखाई देती हैं। इसका छत गुंबद से गिरा हुआ नहीं है। यह धरन तथा प्रकोष्ठों पर आधारित है। और इसकी छत पर बहुत से छोटे-छोटे गुंबद ओं का निर्माण हुआ है। इस प्रकार मुस्लिम राज्य को स्थापना के फलास्वरूप भारतीय स्थापत्य कला में एक मिश्रित शैली का विकास हुआ जो भविष्य में हिंदू मुस्लिम शैली के नाम से प्रख्यात हुई।

कुब्ब्तुल इस्लाम-

कुतुबुद्दीन ऐबक ने पृथ्वीराज पर विजय पाने की पुण्य स्मृति में सर्वप्रथम दिल्ली में एक मस्जिद का निर्माण करवाया तथा उसका नाम कुब्ब्तुल इस्लाम रखा था। इसके संबंध में कहा जाता है कि इसका निर्माण जैन मंदिर के ध्वंसावशेषो पर हुआ था। मंदिर के स्तंभ तोरप छत इत्यादि का प्रयोग मस्जिद की सामग्रियों के रूप में हुआ है। तथा इन पर बनी हुई आकृतियां को या तो तोड़ कर अलग कर दिया गया या फिर उनको प्लास्टर के द्वारा ढक दिया गया था।

क़ुतुब मीनार-

यह दिल्ली में स्थित है। इसका निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने आरंभ करवाया तथा सुल्तान इल्तुतमिश के काल में इसका निर्माण कार्य पूरा हुआ। प्रसिद्ध सूफी ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर इसका नाम कुतुब मीनार रखा गया। कुतुब मीनार का निर्माण मुआज्जिन के अजान देने के लिए किया गया जो उस पर पढ़कर नमाज के लिए अजान दिया। इसकी ऊंचाई 242 फीट है। और नीचे से ऊपर की और पतली होती चली गई है। यह गोलाकार का तथा पांच मंजिला मीनार है।इसके बाहरी भाग पर अरबी तथा फारसी के लेख अंकित है। फिरोजशाह तुगलक के शासन काल में बिजली गिरने से चौथी मंजिल काफी क्षतिग्रस्त हो गई अतः फिरोजशाह तुगलक ने उसे तुड़वा कर उसके स्थान पर दो मंजिलों का निर्माण करवाया।इस प्रकार कुतुबमीनार में चार मंजिलों के स्थान पर पांच मंजिल बन गई जो आज भी विघमान है।

अढ़ाई दिन का झोपड़ा-

इस मस्जिद का निर्माण भी कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा कुब्ब्तुल इस्लाम मस्जिद की पद्धति पर अजमेर में हुआ। इसका इबादत खाना सुंदर तथा विशाल है।

सुल्तान गढ़ी-

यह सुल्तान इल्तुतमिश के जेष्ठ पुत्र नसीरुद्दीन का मकबरा है जो सुल्तान गढ़ी के नाम से प्रसिद्ध है।

इल्तुतमिश का मकबरा-

इल्तुतमिश का मकबरा दिल्ली में स्थित है यह केवल एक ही कक्षा मकबरा है। इसका निर्माण लाल पत्थरों से हुआ है। इसकी दीवार के भीतरी भाग पर पवित्र कुरान को आयतें है।

बदायूं का जामा मस्जिद-

सुल्तान इल्तुतमिश ने बदायूं में जामा मस्जिद का भी निर्माण करवाया था। कालान्तर में सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक ने इसकी मरम्मत कराई थी।

अतारकिन का दरवाजा-

सुल्तान इल्तुतमिश ने जोधपुर राज्य में स्थित नागौर में 1 दरवाजे का निर्माण करवाया और उसका नाम अतारकिन का दरवाजा रखा।

बलबन का मकबरा-

यह मकबरा किला ए-रायापिथौरा के दक्षिण पूर्व में स्थित है। सर्वप्रथम इस मकबरे में मेहराब का वास्तविक रूप दिखाई पड़ता है।

खिलजी

इस काल (1290-1320) के स्थापत्य कला में हिंदू-मुस्लिम शैली के एक नवीन अध्याय का प्रारंभ हुआ। इस काल के भवनों में सुंदरता सुडौलता तथा अनुरूपता थी। किंतु इसका झुकाव भारतीयता की ओर था।

अलाई दरवाजा-

सुल्तान अलाउद्दीन ने क़ुतुब मीनार के निकट इसका निर्माण करवाया। इसका निर्माण लाल पत्थरों तथा संगमरमर के द्वारा हुआ है। यह 1311 में बनकर तैयार हुआ था। यह हिंदू एवं मुस्लिम जो श्रेष्ठ शैलियों का कुशल समन्वय है।

जमात खाना मस्जिद-

शेख निजामुद्दीन औलिया के दरगाह के अघेत में लाल पत्थरों द्वारा एक मस्जिद का निर्माण करवाया उसका नाम जमातखाना मस्जिद रखा गया।

हजार सितून-

अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 में दिल्ली के निकट सीरी नामक एक नगर की स्थापना की और वही हजार सितून (हजार खंभों वाला) नामक भवन का निर्माण करवाया।

हौज-ए-अलाई-

अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी नगर को सुशोभित करने के लिए वहां हौज-ए-अलाई अथवा हौज-ए-तालाब का निर्माण करवाया था।

अणा मस्जिद-

इसका निर्माण मुबारक शाह खिलजी ने राजपूत खाना में करवाया था।

तुगलक कालीन स्थापत्यकला

इस काल (1320-1413) की स्थापत्य शैली खिलजी कालीन शैली से भीन्न थी। अलंकरण तथा भव्यता खिलजी कालीन स्थापत्य कला की मुख्य विशेषता थी। किंतु तुगलक वंश के शासकों ने इसके स्थान पर साध्वी तथा गंभीरता पर विशेष बल दिया। तुगलक काल की आर्थिक दशा खिलजी की अपेक्षा अच्छी ना थी। फिर भी इस काल के सुल्तानों ने स्थापत्य कला की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया तथा सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने तो भवन निर्माण हेतु दिवान-ए-ईमारत एक पृथक विभाग की स्थापना की थी।

तुगलकाबाद का किला-

सुल्तान गयासुद्दीन ने तुगलक वंश की स्थापना के पश्चात दिल्ली में एक तृतीय नगर की स्थापना की उसका नाम तुगलकाबाद रखा। तुगलकाबाद को सुरक्षित रखने के लिए उसने एक किले का निर्माण करवाया इसमें 13 द्वार तथा 7 तालाब है। किले के दक्षिण पश्चिम में एक महल स्थित है।

गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा-

यह तुगलकाबाद किले के बाहर उत्तरी भाग में स्थित है। यह मकबरा पंचभुजीय है। तथा कृतज्ञ झील के मध्य पानी से घिरा है।

अदिलाबाद का किला-

गयासुद्दीन की भांति मोहम्मद बिन तुगलक ने तुगलकाबाद के समीप अदिलाबाद नामक एक किला की स्थापना की थी। यह तुगलकाबाद के उत्तर पूर्व में स्थित है।

शेख निजामुद्दीन औलिया का मकबरा-

इस मकबरे में संगमरमर का सुंदर प्रयोग किया गया है। इसकी गुंबद प्रारंभिक गुंबदों से भिन्न है।

कोटला फिरोजशाह-

सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने फिरोजाबाद नामक पांचवीं दिल्ली बसाई तथा उसमें एक महल की स्थापना की जिसका नाम कोटला फिरोजशाह रखा। अब इसका केवल प्रवेश द्वार शेष है।

फिरोजशाह का मकबरा-

यह एक वर्गकार मकबरा है तथा इसका द्वार दक्षिण की ओर स्थित है। इस मकबरे की शैली से पता चलता है कि उस समय हिंदू-मुस्लिम शैली पूर्ण रूप से विकसित हो चुकी थी।

सैय्यद तथा लोदी वंश की स्थापत्यकला

तैमूर के आक्रमण ने दिल्ली सल्तनत को जर्जित तथा मृतप्राय कर दिया था। अतः इस काल (1414-1526) के सुल्तानों के लिए सुंदर भवनों का निर्माण कराना एक कठिन कार्य हो गया था। लोदी वंश के शासकों की भी स्थापत्य कला के प्रति विशेष रुचि ना थी किंतु सैय्यद वंश की अपेक्षा इस साल में अनेक मकबरे तथा मस्जिदों का निर्माण हुआ। सामान्य रूप से सैय्यद वंश तथा लोदी वंश के काल की स्थापत्य कला के क्षेत्र में मकबरे का काल का सकते हैं। क्योंकि इन दोनों कानों में अधिकतर मृतकों के लिए मकबरे का ही निर्माण हुआ है।

मुबारक शाह सैय्यद का मकबरा-

मुबारक शाह सैय्यद वंश का द्वितीय शासक था। इस का मकबरा आकार में बड़ा तथा अष्टभुजी है। इसकी छत पर एक विशाल गुंबद तथा अष्ट भुजाओं के प्रत्येक भाग में एक छोटे गुंबद की योजना है।

मुहम्मदशाह सैय्यद का मकबरा-

इस मकबरे का निर्माण अलाउद्दीन आलम शाह ने करवाया था।

सिकंदर लोदी का मकबरा-

सुल्तान इब्राहिम लोदी ने सिकंदर लोदी के मकबरे का निर्माण करवाया था। इसका निर्माण मोहम्मद शाह के मकबरे की रूपरेखा पर 1518 में हुआ था।